कृषि-अर्थशास्त्रियोंके लिअे सवाल

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक ४५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ९ जनवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सुस्ती और आत्मवंचनासे बचें

अुत्तर प्रदेशकी धारासभाके सदस्य और ग्रामसेवाके रचनाकार्योंमें दिलचस्पी रखनेवाले अेक भाअी लिखते हैं:

"'हरिजनसेवक' में स्वामी आनन्दके भावना और ओजपूर्ण लेख शराबबन्दीके सम्बन्धमें प्रकाशित हुअे हैं। सरकारके जिन मंत्रियों, अधिकारियों अथवा शिक्षित कहे जानेवाले लोगोंने संविधान-सम्मत हमारे देशकी शराबबन्दीकी आलोचना करनेका दुःसाहस किया है, अुनकी अुचित भर्त्सना भी लेखोंमें की गअी है। परन्तु यह विचार यहीं समाप्त कर दिया गया है। शराबबन्दीकी नीतिका समर्थन करनेकी आज अितनी आवश्यकता नहीं है, जितनी अुसको व्यावहारिक रूपमें सफल बनानेके प्रश्न पर विचार करनेकी। अैसे तो अिने-गिने लोग ही होंगे जो आर्थिक अथवा सामाजिक कारणोंसे शराबबन्दीको अनुचित मानते हों। परन्तु जनसाधारण आज जो प्रश्न पूछता है, वह यह है कि जिन क्षेत्रोंमें कानूनसे नशाबन्दी की गअी है, क्या वहां वास्तविक रूपमें नशीली वस्तुओंका प्रयोग रुक गया है? वस्तुस्थिति यह कही जाती है कि, जहां पहले लाअिसेंस प्राप्त अेक नशेकी दुकान होती थी, वहां अिन चीजोंके नाजायज तरीके और चोरीसे बेचनेवाले बहुतसे अड्डे हो गये हैं। व्यसन तो नहीं रुका, केवल जो पैसा सरकारी कोषमें जाता था, वह अब अपराधियोंकी जेबोंमें जाता है। अिस अनुमानके लिअे आंकड़े तो प्राप्त नहीं हैं, परन्तु लोगोंकी धारणा यह है कि शराब और अन्य नशीली चीजोंके व्यवहारमें कोअी खास कमी नहीं हुअी है। नाजायज शराब बनानेमें तो निश्चय ही वृद्धि हुअी है। नशाबन्दीके कानूनको अमलमें लानेके लिअे आज जगह-जगह जो पुलिस तैनात की गअी है, वह असली बेचने और बनानेवालोंको पकड़नेमें तो अितनी तत्परता नहीं दिखाती, जितनी गरीब लोगों और निर्दोष यात्रियोंकी तलाशी और रिश्वत लेनेमें। सार्वजनिक चरित्रका जितना नीचा स्तर हमारे देशमें है, अुसके कारण शासन द्वारा शराबबन्दी सरीखी अच्छी योजनाओंको अमलमें लानेमें सफलता नहीं मिल रही है। नशाबन्दीके सम्बन्धमें यह गम्भीर समस्या है। मैं आशा करता हूं कि आप अिस पर अपने विचार प्रगट करेंगे।"

यह दलील नयी नहीं है। कअी लोग अिस तरह कहते हैं और शराब चालू रखवानेवाले लोगोंको अनजानमें सहारा देते हैं। ये भाअी कहते हैं कि, 'अैसे तो अिने-गिने लोग ही होंगे जो आर्थिक अथवा सामाजिक कारणोंसे शराबबन्दीको अनुचित मानते हैं।' क्या यह सही है? पत्रलेखकसे मेरी प्रार्थना है कि, वे खुद गहरा विचार करें तो अुन्हें मालूम होगा कि अिसके पीछे अेकमात्र आर्थिक कारण ही है, जिसकी वजहसे यह तुरन्त करने लायक आवश्यक सुधार नहीं हो रहा है। अिस संबंधमें हम आत्मवंचनामें न पड़ें।

पत्रलेखकने शराबबन्दीको व्यवहारमें सफल बनानेकी तकलीफका जिक्र किया है। अिस बारेमें अुनकी दलील सारांशमें यही है कि, शराबखोर लोग गैरकानूनी शराब पीते हैं; अिसका धंधा ही चल पड़ा है। अुनको रोकनेका काम बड़ा मुश्किल हो रहा है, क्योंकि पुलिसकी गफलतके कारण कानूनका अमल अच्छी तरह नहीं हो पाता है। अिससे सरकारकी आमदनी तो बरबाद होती ही है और नशाबन्दीका फायदा भी नहीं मिलता। तो फिर नशाबन्दी दाखिल करनेसे क्या फायदा?

अिस दलीलके मूलमें देखें तो क्या आर्थिक आमदनीका लोभ ही काम नहीं कर रहा है? अेक दो मिसालें देता हूं। जकातकी चोरी करके सोना, हीरे-जवाहरात वगैरा हमारे यहां बाहरसे लाया जाता है। वहां भी जकातका बन्दोबस्त रखनेवालोंमें बेअीमान लोग नहीं हैं, अैसा नहीं कहा जा सकता। रिश्वतखोरी वहां भी चलती है। अिसी तरह कपड़ा, अफीम, वगैरा अनेक चीजोंका चोरधंधा चलता है। अिससे सरकारी आमदनी बरबाद होती है। परन्तु क्या हम यह कहेंगे कि अुनके कानून निकाल दिये जायं? चोरी-डकैती वगैराका कायदा लीजिये। चोरी, डकैती वगैरा होती ही रहती है। परन्तु हम यह नहीं कहेंगे कि अिससे अुनका कायदा बेकार सिद्ध होता है। यही बात शराबबन्दीके लिअे भी लागू करनी चाहिये।

और शराबबन्दीसे गैरकानूनी शराब पीना कुछ बढ़ा हो अैसा मानें, तो भी क्या सरकार द्वारा बेची जानेवाली कानूनी शराब लोग जितनी मात्रामें पीते अुतनी ही मात्रामें गैरकानूनी शराब आज पीते हैं? हरगिज नहीं। शराबबन्दीसे जरूर फायदा होता है; लेकिन हमारा आमदनीका लोभ ही हमें अूपर बतायी गलत दलीलमें डालकर आत्मवंचना कराता है। शराबबन्दीमें माननेवाले लोग अिससे सावधान रहें।

अुत्तर प्रदेशमें शराबबन्दी सारे प्रदेशमें जारी की गअी है या अमुक भागमें, यह मुझे मालूम नहीं है। परन्तु हमें ध्यान रखना चाहिये कि यदि ठीक ढंगसे काम करना है, तो सारे प्रदेशमें अेकसाथ और सारे देशमें शराबबन्दीका काम जारी होना चाहिये। अिसका नैतिक असर अच्छा होता है, गैरकानूनी शराबकी चोरी वगैरा पर अच्छा काबू आता है, और बन्दोबस्तमें भी सुविधा होती है। मध्य प्रदेशकी तरह आधे भागमें शराब पिलाने और दूसरे आधेमें शराब बन्द करनेकी गलती करना सरासर नाकामयाबीको न्योता देना है।

पुलिसके बन्दोबस्तके बारेमें पत्रलेखककी शिकायत है। वैसे ही अश्रद्धालु अफसरों और सुस्त मंत्रियोंके बारेमें भी शिकायत की जा सकती है। अिसका अुपाय यही है कि अैसे लोगोंको या तो हटा देना चाहिये या सुधारना चाहिये और बन्दोबस्त पक्का

www.vinoba.in

करते जाना चाहिये। हमें समझना चाहिये कि शराबबन्दीका काम अेक नया जड़मूलसे क्रांतिका काम है। हमारे देशमें मुश्किलसे १० फी सदी आदमी शराब पीते होंगे। तो भी अुनको अिस बुराअीसे बचाना है, क्योंकि वे गरीब हैं। और अुनके परिवारकी दुःखकी पुकार सुनना और दुःख दूर करना हमारा सामाजिक कर्तव्य हो जाता है। अुनको शराब पिलाकर धन खींचना राज्यके लिअे सामाजिक अन्याय और पाप होगा।

हमें यह महान सुधार सिद्ध करनेमें बड़ा धैर्य और श्रद्धा रखनी होगी। और यह मानना कि शराबबन्दीसे फायदा नहीं है, सरासर झूठ है। जैसा कि बम्बअीके प्रधानमंत्रीने अेक जलसेमें थोड़े दिन पहले कहा था, यह कहना गलत है कि लोग जहां-तहां शराब बनाकर पीते हैं। और पीते हों तो भी आज स्थिति पहलेसे कअी गुनी अच्छी ही है और शराबीके बालबच्चे चैन और सुखसे रहते हैं। चोरीसे लोग परहेज करते हैं, यह हमारा संस्कार है। शराबके बारेमें भी हम यह सुसंस्कार बढ़ावें और जारी करें। यह काम हमारे धर्म और शिक्षाको करना चाहिये।

आज हमें श्रद्धाबल चाहिये। कांग्रेस आदि लोकसंस्थाओंका यह फर्ज हो जाता है कि वे अपने मंत्रियोंको फरमावें कि शराब-बन्दीको हमारी पंचवर्षीय योजनामें अेक महत्त्वका स्थान देना चाहिये। यह अेक लोककल्याणकी बात है। अिससे जो पापकी आमदनी मिट जाती है, वह घाटा नहीं बल्कि लाभ है, तरक्की है। बिक्री-करसे पता चलता है कि आमदनीकी दृष्टिसे भी सरकारोंको कोअी हानि नहीं होती, क्योंकि प्रजामें शराबके जो पैसे बचते हैं, वे करके रूपमें दूसरे रास्तेसे सरकारको मिलते हैं। और गरीब लोगोंको शराबके बजाय खाना, कपड़ा, अित्यादि जीवनकी जरूरी चीजें मिलती हैं। और सुख तथा शांतिका जो सूक्ष्म लाभ होता है, अुसे तो अमूल्य ही मानना चाहिये। अिसलिअे पत्रलेखक जैसे मित्रोंसे मेरी प्रार्थना है कि शराबबन्दीके लिअे वे अपने-अपने प्रदेशमें जोरोंसे आन्दोलन चलायें और सरकारोंको शराबबन्दी जारी करनेके लिअे मजबूर करें। आगामी कांग्रेस अधिवेशनमें अिसका प्रस्ताव पास होना चाहिये और कांग्रेसी सरकारोंको यह आज्ञा देनी चाहिये कि वे आगामी पांच वर्षके अन्दर देशभरमें संविधानका शराबबन्दी सम्बन्धी आदेश पूरा करें।

१-१-'५४ **मगनभाई देसाई**

शांति-सेना

जापानसे मेरे पास अभी-अभी वहां होनेवाली शांतिवादियोंकी दूसरी विश्व-परिषद्के बारेमें अेक पत्र आया है। परिषद्की योजनाके अनुसार अुसका आरम्भ "शांति-पगोड़ा" के निर्माणसे होगा।

हम ठीक कल्पना नहीं कर सकते कि जापानमें शांतिके पक्षमें काम करनेवाले लोगोंको कितनी कठिनाअीमें से गुजरना पड़ रहा होगा। अुनके संविधानमें निःशस्त्रीकरणकी धाराका समावेश हुआ है। तब भी अुन्हें शस्त्र-सज्जित होनेके लिअे बाध्य किया जा रहा है। फिर वहां अैसे लोग हैं, जिनका शस्त्रीकरणमें स्वार्थ है और अिसलिअे जो शस्त्रीकरणका स्वागत करेंगे। तब भी वहां, हमें कृतज्ञ होना चाहिये, हजारों लोग अैसे हैं जो शांतिके लिअे कोशिश कर रहे हैं।

शांतिके लिअे हो रहा यह प्रयत्न अभी भी अभीष्ट सीमा तक नहीं पहुंचा है। हम लोग भारतमें शांति-सेनाकी बात करते रहे हैं। अुसके बारेमें लिखा भी बहुत गया है, पर किया कुछ भी नहीं गया। यह हमारे लिअे शर्मकी बात है कि अभी भी काश्मीरमें और अन्यान्य आवश्यक जगहोंमें शांति-सेनाका कोअी काम नहीं हो रहा है। आज दुनियाकी बड़ीसे बड़ी जरूरतोंमें अेक यह भी है कि भारत, कोरिया, जापान, दक्षिण अफ्रीका आदिमें शांति-सेनाका काम होना चाहिये। भारतको अिस जरूरतकी पूर्तिमें नेतृत्व करना चाहिये।

(अंग्रेजीसे) **राल्फ आर० कैथान**

कार्यकर्ताओंको चेतावनी

[ता० ८-१२-'५३ को बमनगामा पड़ाव, सहर्षा, में दिये हुअे प्रार्थना-प्रवचनसे।]

जहां बड़ा जनसमूह अुमड़ रहा हो और अितना अुत्साह दीख रहा हो, वहां भूदान-यज्ञमें सुस्ती दिखे और मांग पूरी होनेमें देर लगे, तो हम कार्यकर्ताओंको गुनहगार समझेंगे। कुछ कार्यकर्ता कांग्रेसके हैं। अुन्हें आदेश है कि कांग्रेस अपने-अपने जिलेका कोटा पूरा करे। अगर ये सुस्तायें तो पेड़की जिस शाखा पर वे खड़े हैं, अुसे ही वे काटेंगे यानी सार्वजनिक जीवनमें वे निस्तेज हो जायेंगे। अिसलिअे अुन्हें जाग जाना चाहिये और जनताके साथ अुत्साहसे काममें लग जाना चाहिये। प्रजा-समाजवादी कहते हैं कि बाबाने हमारा ही काम अुठा लिया है। हम मंजूर करते हैं। पर अगर वे दिलोजानसे अिस काममें नहीं लगते, तो हम कहते हैं कि वे समाजवादकी जड़को ही काटेंगे। हिन्दुस्तानमें समाजवादको बढ़ावा देनेमें वे असमर्थ होंगे। फिर भी समाजवाद बढ़ेगा क्योंकि वह अच्छा है। लेकिन कार्यकर्ता नालायक साबित होंगे। यह हम आगाह कर देना चाहते हैं। वैसे ही जो रचनात्मक कार्यकर्ता हैं, जो सर्वोदयके प्रतिनिधि अपनेको मानते हैं, अुनकी भी कसौटी होनेवाली है। भूदान-यज्ञमें तो अुन्हें प्राण-वायु मिला है। अुसके बिना हमारे कअी रचनात्मक कार्य निस्तेज हो गये थे। अब अिसने सबमें जान फूंकी है। अिसलिअे हम कहते हैं कि सर्वोदय विचार पर भरोसा रखनेवालोंके लिअे अेक बड़ा भारी मौका है। अुसे अगर वे खोते हैं तो वे हरगिज आगे नहीं बढ़ सकते। फिर तो अपने कामको खतम करते हैं, अैसा होगा।

कोअी भी क्रांतिका काम, बुनियादी काम करना चाहते हैं, गांव-गांव सन्देशा पहुंचाना चाहते हैं, तो गांव-गांव जानकारी पहुंचानेका अिन्तजाम हमें फौरन करना चाहिये। १५ महीने हुअे हम बिहारमें घूम रहे हैं। कार्यकर्ताओंकी कुछ जिम्मेदारी है कि नहीं? ये सारे लोग जो अिकट्ठा हुअे हैं, हमारी परीक्षा ले रहे हैं। हम बाबाको जमीन देनेके लिअे तैयार हैं। हम समझते हैं कि भूमिहीनोंको जमीन देना हमारा कर्तव्य है और अिसलिअे हम बाबाकी बात सुननेके लिअे आये हैं और तिस पर भी आप हमारे पास न पहुंचे तो कैसे होगा? अैसी वे हमारी हंसी करते हैं। अिनके चेहरे हमें सहानुभूति बता रहे हैं। आये हुअे सबके पास अगर कार्यकर्ता पहुंचें, तो सबसे जरूर भूदान मिलेगा। अेक सभामें हम हरअेकके पास पहुंचे और अेक अेकके कंधे पर हाथ रखकर पूछा कि क्यों भगवान्ने कुछ दिया है? कितना दिया है? अितना है। हमने पूछा कितना दोगे? तो कहा अितना देंगे। जिस किसीके पास पहुंचे हरअेकने दिया। कार्यकर्ता देखते रहे। तो केवल व्याख्यान देनेसे काम नहीं चलता, लोगोंके पास पहुंचना होता है। परमेश्वर रूपी जनताकी आराधना करनी होती है। जब हृदयसे हृदय छूता है, तब दान मिलता है। अिसलिअे हम आजकी मीटिंगमें कार्य-कर्ताओंको सचेत करना चाहते हैं कि वे हरअेकके पास पहुंचें।

देहाती लोग थोड़ेमें समझते हैं। हमें लम्बे-लम्बे व्याख्यान तो गया और पटनामें देने होते हैं, क्योंकि वहांके लोगोंके मनमें तर्कके परदे होते हैं और अुन्हें दूर करना होता है। लेकिन यहां पर वैसे परदे नहीं हैं। हां, कुछ मोह होता है। लेकिन वह जल्दी छूट सकता है। अिशारेसे समझनेवाली जनताके सामने लम्बे-चौड़े व्याख्यान देनेकी जरूरत नहीं है।

भगवत्-स्वरूप समझकर, भगवान् पर श्रद्धा रखकर, जो आज नहीं देता वह कल देगा, अिस निष्ठासे आप निकलेंगे तो आपको भर भर कर मिलेगा। ज्ञानका प्रचार निरंतर करें। विश्वास रखें कि ज्ञानरूपी बीज बोया जायेगा तो वह अुगे

www.vinoba.in

वगैर नहीं रहेगा। दूसरा बीज कभी-कभी नहीं अुगता है, लेकिन विचार-बीज जरूर अुगता ही है, अैसी श्रद्धा रखकर विचार-प्रचार कीजिये।

विनोबा

टिप्पणियां

खानबंधुओंकी रिहाअी

यह अंक छपने जा रहा है, अिसी बीच खान अब्दुलगफ्फारखान तथा डॉ० खानसाहब और दूसरे सब खुदाअी खिदमतगारोंको छोड़ देनेकी खबर मिली है, जिन्हें लगभग छः बरससे पाकिस्तानके जेलमें सड़ाया जा रहा था। यह चीज संसारको नये वर्षकी अुम्दा भेंट मानी जायगी। जिस वक्त पाकिस्तानमें दूरगामी कार्यों पर विचार चल रहा है, तब देशके अिन महान और अुत्तम सेवकोंको जेलमें बन्द रखना पाकिस्तानके लिअे अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा था। अिस स्थितिका अन्त करके प्रधानमंत्री श्री मोहम्मदअलीने अेक अच्छा कदम अुठाया है। अिसी प्रकार वे अगर परदेशके साथ फौजी मददकी संधि करके बलवान बननेके भुलावेमें से निकल जायं, तो पाकिस्तानकी बहुत बड़ी सेवा कर सकेंगे।

खानबन्धुओंको लम्बी तकलीफके बाद आरामकी जरूरत ह। पिछले छः बरसोंमें दुनियामें, भारतमें और पाकिस्तानमें क्या क्या हुआ है, अिसे भी अुन्हें देखना-समझना है। भगवान् अुन्हें तुरन्त स्वस्थ और सबल बना कर फिरसे अपनी सेवाके कामोंमें लगा ले, यही हम सबकी हार्दिक अिच्छा है।

६–१–'५४ म० प्र०

(गुजरातीसे)

यह काफी नहीं है

प्रेसिडेण्ट आअिसनहोवरने यह प्रस्ताव रखा है कि संयुक्त राष्ट्रसंघके मातहत अेक आन्तरराष्ट्रीय अेजेन्सी कायम की जाय, जिसका काम दुनियाकी यूरेनियम और अैसी दूसरी धातुओंको जमा करना और शांतिपूर्ण अुपयोगके लिअे अुनका बंटवारा करना होगा। यह प्रस्ताव अपने आपमें बुरा या अस्वीकार करने लायक नहीं है। लेकिन यह काफी नहीं है। सवाल यह है कि क्या यह प्रस्ताव मनुष्य-जातिको अणुबमकी नारकीय यातनाओंसे सुरक्षा प्रदान करेगा, जो भगवान् न करे कभी तीसरा विश्वयुद्ध शुरू हुआ, तो किसी भी क्षण अुसे अपना शिकार बना सकती हैं। अमेरिका, सोवियट रूस या दूसरे किसी राष्ट्रने बहुत बड़ी संख्यामें जो अणुबम जमा कर लिये हैं अुनका क्या होगा? बेशक, अुनका अेक वही अुपयोग है, जो हिरोशिमा और नागासाकीने नारकीय यातनाओंके भयंकर शब्दोंमें हमें कहा है। क्या ये शक्तियां अेक जगह मिलकर युद्धमें अणुबमके अुपयोग पर पूरा प्रतिबन्ध लगानेकी बात सोचेंगी और अपने जमा किये हुअे अणुबम अैसी संस्थाको सौंप देंगी, जो गहरे समुद्रोंके अतल तलमें अुन्हें शांतिसे डुबो दे? केवल ये समुद्र ही किसीको नुकसान पहुंचाये विना अिन बमोंको अपने पेटमें पचा सकते हैं। लेकिन हम प्रतीक्षा करें और देखें कि दुनियाकी अणुबम रखनेवाली शक्तियां प्रेसिडेण्टके प्रस्तावके बारेमें क्या करती हैं।

२५–१२–'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

भारतीय हिन्दी पारंगत परीक्षा

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्की 'भारतीय हिन्दी पारंगत' परीक्षा गत नवम्बरके अंतिम सप्ताहमें १२ केन्द्रोंमें हुअी। १२० आवेदकोंमें से ९९ परीक्षामें बैठे। आगामी परीक्षा मअी १९५४के अंतिम सप्ताहमें होगी।

'हिन्दी सेवक' (गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद) परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको विशेष शर्तोंकी पूर्ति पर हाजिरीके नियमोंसे छूट देकर पारंगत परीक्षामें सीधे बैठनेकी अनुमति दी जायेगी। विशेष विवरणके लिअे परीक्षा नियमावली मंगाकर देखें।

अ० भा० हिन्दी परिषद्, देवदूत विद्यार्थी

आगरा परीक्षा-मंत्री

अेक सरकारी विज्ञापन!

'अेयर-अिंडिया अिंटरनेशनल' नामक विमानी कंपनीको अब केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त अेक कारपोरेशनने अपने हाथमें ले लिया है। अुसका अेक सचित्र विज्ञापन सरकारी और गैर-सरकारी पत्रों वगैरामें दिया जाता है। अुसमें बताया गया है कि आजकल लन्दनकी यात्रा करनेसे आप रु० १५१२ की रकम बचा सकते हैं। बादमें अिस बातकी सचित्र जानकारी देते हुअे कि अुस बचतका आप क्या क्या कर सकते हैं, यह कहा गया है कि आप अपनी सासको अपने साथ लन्दन ले जा सकते हैं और अुसे वहीं छोड़कर लौट सकते हैं!

अिसके अलावा, लन्दनमें ही अुस बचतकी मददसे आप अेक सुन्दर स्टेनोग्राफर लड़कीको अेक हफ्ते नौकरी पर रख सकते हैं और अुसे गोदमें (चित्रमें बताये अनुसार) बैठाकर अपने पत्र 'डिक्टेट' करा सकते हैं।

और फिर अेक दोपहरका समय घुड़दौड़में बिता कर हारनेके बाद (चित्रमें बताये मुताबिक) पिस्तोलसे अपनी कनपटी अुड़ा सकते हैं!

अैसा या दूसरा कैसा भी विज्ञापन हमारी सरकार समाजके लोगोंके लिअे पत्रोंमें दे, यह सचमुच बड़ी बलिहारीकी बात है। हमारे देशके पुरुषको भले अुस विज्ञापनमें टोपवाला गोरा चित्रित किया हो, लेकिन बेचारी सास तो दक्षिणी या पारसी साड़ीवाली ही बताअी गयी है। अिसलिअे वह तो स्पष्ट ही देशी है। अपनी पत्नीके साथ नापसन्द सासको पालना पड़े, यह चीज अिंग्लैंड, अमेरिका वगैराके अुपन्यासोंमें तो पढ़ी है; और अिसलिअे अुसे मुसाफिरीके बहाने विदेशमें या चाहे जहां छोड़ देनेकी बात वहांके लोग, मुमकिन है, चाहते हों। लेकिन हमारे देशमें क्या यह वास्तविक और सरकारी विज्ञापनमें रखने जैसी भावना है?

अिसके अलावा, अिंग्लैंड जाकर किसी स्टेनोग्राफर सेक्रेटरीको नौकर रखा जा सकता है, लेकिन अुसे कुर्सीके बजाय अपनी गोदमें बैठाकर पत्र लिखवानेका आनन्द भोगना क्या सचमुच बचतका सही अुपयोग कहा जायगा?

और विदेशोंमें जाकर घुड़दौड़की होड़में जुआ खेलकर पामाल होते ही पिस्तोलसे कनपटी अुड़ा देनेके तरीकेको भी कोअी सरकार अपनी प्रजाको सिखाने जैसा मान सकती है?

यह क्यों नहीं खयालमें आता कि परदेशी लोग अिस विज्ञापनको देखकर भारतके लोगोंके बारेमें क्या सोचेंगे। या हमारी सरकार यह मानती है कि हवाके रास्ते यात्रा करनेवालोंकी नअी सभ्यतामें अैसी बातें चल सकती हैं या अुड़ सकती हैं? अैसी बातोंको बढ़ावा देनेके लिअे ही क्या सरकार विमान-विभाग चलाती है?

(गुजरातीसे) गोपालदास पटेल

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

गांधीजी

संपादक: भारतन् कुमारप्पा

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

९ जनवरी १९५४

कृषि-अर्थशास्त्रियोंके लिअे सवाल

राष्ट्रीय योजना-कमीशनके अुपाध्यक्ष श्री व्ही० टी० कृष्णमाचारीने कृषि-अर्थशास्त्रसे सम्बन्धित भारतीय समाज (अिंडियन सोसायटी ऑफ अेग्रिकल्चरल अिकॉनामिक्स)के चौदहवें वार्षिक अधिवेशनमें अध्यक्षपदसे जो भाषण दिया, अुसमें अुन्होंने खेतीके क्षेत्रमें फैली हुअी भयंकर बेकारी और अर्ध-बेकारीकी ओर सचोट शब्दोंमें सबका ध्यान खींचा। आजकी फैशनके अनुसार, अुन्होंने भी १९२१ से आज तक बढ़ी हुअी जनसंख्याका जिक्र किया और यह दलील दी कि १९२१ में फी आदमी खेतीकी जमीनका आंकड़ा १११ सेन्ट था, जब कि १९५१ में वह घटकर ८४ सेन्ट हो गया। अिससे यही मालूम होता है कि हमारा देश किसी न किसी कारणसे अपनी पड़ती जमीनको खेतीके लायक नहीं बना सका। अुन्होंने बताया कि आज हमारी सिंचाअीकी पद्धतिमें अनेक तरहकी कमियां हैं, जमीनकी सिंचाअीका पूरा-पूरा प्रबन्ध नहीं है, लेकिन अिस बात पर जोर दिया कि पंचवर्षीय योजनामें सिंचाअीकी दिशामें देशके काफी आगे बढ़नेकी व्यवस्था है।

लेकिन अिससे आगे चलकर हमें अिस बातकी जरूरत है कि खेतीके साथ तुरन्त सहायक गृह-अुद्योग जोड़े जायं; अिसके बिना जमीनके छोटे-छोटे टुकड़ोंवाले हमारे खेती-अुद्योगको गुजर चलाने लायक बनाना अगर असंभव नहीं तो बहुत कठिन जरूर है। अिस संबंधमें अिस प्रश्नके मानव पहलूको अक्सर भुला दिया जाता है। जरूरत अिस बातकी है कि छोटे पैमानेकी खेती करनेवाले किसान और अुसके मजदूर या असामीको आर्थिक दृष्टिसे ज्यादा लाभदायक काम दिया जाय, अुन्हें बेकारीसे बचाया जाय और जबरन् लादी हुअी काहिलीसे अुनका अुद्धार किया जाय, जो अुनकी आदत बल्कि अुनका स्वभाव ही बन गअी है। अिस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे बड़े पैमानेके प्रयत्नों, बड़े पैमानेकी योजनाओं वगैराकी बातें करना बेकार है। क्योंकि अिन सबका लगभग यही मतलब होता है कि गरीब किसानको भुला दिया जाय, और गरीब ग्रामवासीके जीवन और श्रम पर होनेवाले अैसी बड़ी योजनाओंके सामाजिक और सांस्कृतिक परिणामोंकी अुपेक्षा की जाय।

अिसलिअे सच्ची समस्या अनुकूल ढंगसे हमारी खेतीकी अर्थ-व्यवस्थाका पुनर्गठन करने की है; और लगभग शून्यमें तथा गांववालोंकी सच्ची जरूरतों व कठिनाअियोंकी अुपेक्षा करके बनाअी हुअी योजनाओंसे यह समस्या हल नहीं होगी। बड़े पैमानेकी विशाल योजनाओं और प्राजेक्टोंकी दौड़में, जो आजकी आम बात हो गअी है, मुझे डर है कि हम मुख्य प्रश्नको भूल जानेका खतरा अुठा रहे हैं। अिसलिअे अगर कृषि-अर्थशास्त्री हमारी कृषि-समस्याके मानव पहलू पर ध्यान देना शुरू करें तो बड़ा अच्छा होगा। अुन्हें याद रखना चाहिये कि भूदान-आन्दोलनने हमारी जनताके हृदयको प्रभावित कर लिया है, क्योंकि वह अिस समस्याके मानव पहलूको सीधा छूता है और देशके लाखों बेजमीन परिवारोंको, प्रति परिवार ५ अेकड़के हिसाबसे गांवोंमें बसाकर जमीनके मालिक बनाने और आर्थिक दृष्टिसे प्रत्येक परिवारको स्वावलम्बी बनानेका ध्येय रखता है। आज सरकार जिन विचारों और योजनाओंको शुरू कर रही है; वे क्या अिसके विरुद्ध नहीं हैं? अच्छा होगा अगर कृषि-अर्थशास्त्री अपनी समस्याओंका समाज-शास्त्र और मानवशास्त्रकी दृष्टिसे भी अध्ययन करें, जिसका केन्द्र है भारतके गांवका किसान, अुसका जीवन और श्रम। हम देशके नवनिर्माणके लिअे जो कुछ भी करना चाहें, अुसका आरम्भ और आधार अिस बुनियाद पर होना चाहिये; हां, अगर हम अपने खेतीके क्षेत्रमें व्यावसायिक क्रांतिका भारतीय संस्करण तैयार करके, पश्चिमकी तरह, आर्थिक केन्द्रीकरणकी प्रक्रियाको गतिमान बनानेका फैसला करें तो बात दूसरी है।

२९-१२-'५३ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

बड़े अुद्योग बनाम छोटे अुद्योग

अभी अुस दिन बम्बअीमें 'अेम्प्लायर्स फेडरेशन आफ अिंडिया' की अिक्कीसवीं वार्षिक बैठकके अध्यक्षने भारत सरकारके खिलाफ जाहिर शिकायत करते हुअे कहा कि अुसके कार्योंमें अेकसूत्रता और संगतिका अभाव है और वे अनिश्चयकी हालत पैदा करते हैं; तथा "अुद्योग-व्यापार आदिका पक्ष पेश करनेवाले जो निवेदन-पत्र अुसके पास भेजे जाते हैं अुन पर प्रायः कोअी ध्यान नहीं दिया जाता।" अिस आरोपका सार यह है कि 'मजदूरोंके हकमें कानून पर कानून बन रहे हैं, मुनाफा, अुत्पादन और वितरण पर तरह तरहके नियंत्रण डाले गये हैं, पुराने अथवा नये अुद्योगोंको पर्याप्त प्रोत्साहन देनेसे अिनकार किया जाता है और "अधिकारके पदों पर आरूढ़ कुछ व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी भूलकर मनमाने मत प्रकाशित करते रहते हैं," जिससे न केवल अुद्योग-पतियोंका मन कमजोर पड़ता जा रहा है, बल्कि व्यापारमें रुपया लगानेवाले दूसरे लोगोंका विश्वास भी डिगने लगा है।'

यह तो बम्बअीमें हुआ, वहां दूसरे छोर पर कलकत्तेमें खानगी अुद्योगोंके प्रति सरकारी नीतिके विषयमें यही बात अेसोसियेटेड चेम्बर्स आफ कामर्सकी वार्षिक बैठकमें बोलते हुअे अुसके अध्यक्षने भी कही, यद्यपि अुनके कहनेका ढंग अुनके बम्बअीवाले भारतीय सहयोगी-जैसा कड़वा और बेलाग नहीं था। अुन्होंने अिस बातकी हिमायत की कि मौजूदा कर-नीतिमें अुपयुक्त परिवर्तन करके "नये-नये अुद्योगोंमें काम, बचत, योजना और पूंजी" के लिअे ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। अुन्होंने रुपयेकी कीमत, मजदूरी, सामान्य परिस्थितियों और मजदूर समस्याकी मौजूदा हालतकी भी चर्चा की, और अपने पक्षकी दृष्टिसे सरकारको कुछ सलाह भी दी। अिस बैठकके विषयमें अेक अुल्लेखनीय बात यह है कि भारतके प्रधानमंत्री और अर्थमंत्री भी अुसमें अुपस्थित थे।

दोनों भाषणोंमें अेक अर्थपूर्ण विशेषता है; अुनमें छोटे पैमानेके अुद्योगों अथवा ग्राम-अुद्योगों और हमारी राष्ट्रीय अर्थ-रचनामें अुनके महत्त्वकी कोअी चर्चा नहीं है।

जैसा कि हम जानते हैं, पंचवार्षिक योजना हमारी अर्थरचनामें अिन अुद्योगोंका महत्त्व स्वीकार करती है और बड़े तथा छोटे दोनों अुद्योगोंके लिअे अुत्पादनके समान कार्यक्रमकी कल्पना करती है। अुपर्युक्त दोनों संस्थायें अिस विषय पर चुप हैं। और न सिर्फ चुप हैं, बल्कि अुसका विरोध करती मालूम होती हैं। अुदाहरणके लिअे, कलकत्तेकी बैठकमें अेसोसियेटेड चेम्बर्सके अध्यक्ष श्री पेकीसने शिकायतके लहजेमें बोलते हुअे कहा कि अुद्योगीकरणकी विरोधी कुछ दूसरी विचारधारायें भी चल रही हैं और गये साल अुनने बहुत हो-हल्ला भी किया। ये विचार-धारायें (वक्ताके शब्दोंमें) मोटर-लारी-वाली आधुनिक अर्थ-रचनाको छोड़कर बैलगाड़ीकी अर्थरचना चलाना चाहती हैं। जाहिर है कि वे खुद मोटर-लारीकी ही अर्थरचना चाहते हैं और बैलगाड़ीकी अर्थरचनाको बिलकुल बिदा कर देना चाहते हैं। भारत सरकार भी दरहकीकत बैलगाड़ी-वाली अर्थव्यवस्था नहीं चाहती और न पंचवार्षिक योजना ही वैसा चाहती है, यद्यपि

www.vinoba.in

वह अिस बातको अितने साफ और जोरदार शब्दोंमें नहीं कहती। आज जो लोग अुसके अमलकी व्यवस्था कर रहे हैं, वे छोटे-छोटे अुद्योगोंमें माननेवाले लोग नहीं हैं।

लेकिन धीरे-धीरे सही पर निश्चयपूर्वक हमें यह चीज प्रत्यक्ष होती जा रही है कि भारत अपनी अर्थरचनामें हमारे छोटे-छोटे अुद्योगों और ग्रामोद्योगोंको अुनका योग्य स्थान दिये बिना, अपना पूरा और सही अुद्धार कर ही नहीं सकता।

लेकिन आज कठिनाअी यह है कि देशमें जो बहस-मुबाहिसा चलता रहता है, अुसमें सवालका यह पहलू जितने स्पष्ट रूपमें और जोरसे रखा जाना चाहिये, नहीं रखा जाता। यद्यपि स्वराज्य आ गया है और जिनके हाथमें शासन है अुनसे गरीब जनताका प्रतिनिधित्व करनेकी आशा की जाती है, पर आज भी यह हालत बनी हुअी है कि अुनकी सुनवाअी नहीं होती। अिसका अेक अुदाहरण लीजिये। अखबारोंमें आयी हुअी अेक रिपोर्टके अनुसार, बम्बअी धारासभामें अेक सदस्यके अिस कथनका जवाब देते हुअे कि सेल्स-टेक्सके विषयमें किसान-वर्गका मत नहीं सुना गया है, अर्थमंत्रीने कहा कि सरकारके पास अिस टेक्सके विरोधमें जो ३–४ सौ पत्र आये हैं, अुनमें किसानोंकी ओरसे आया हुआ अेक भी पत्र नहीं है। निःसंदेह अिसका यह अर्थ नहीं कि किसानोंको अुसके विरोधका कोअी कारण नहीं प्रतीत हुआ। ज्यादासे ज्यादा अुसका यही अर्थ लिया जा सकता है कि व्यापारी वर्गके लोगोंकी तरह हमारी सामान्य जनता अपनी बातको जोरसे कहना नहीं जानती। अुद्योग और व्यापारके प्रतिनिधि और अुनके संघ ज्यादा बोलते हैं अिसलिअे सामान्यतः अुन्हींकी बात सुननेमें आती है। लेकिन वे जो कुछ कहते हैं अुससे तसवीरका सिर्फ अेकांगी दर्शन मिलता है। अुनके अनुसार तो जिसे श्री पेकीसने मोटर-लारीकी अर्थव्यवस्थाका सूचक नाम दिया है, पश्चिमकी वह पूंजीवादी अर्थरचना ही चलाना चाहिये, क्योंकि वही मुनाफा दे सकती है, और वही पूंजी-निर्माणका सम्पादन कर सकती है। यह बात अब अधिकाधिक साफ होती जा रही है कि अपनी भावी अर्थरचना और प्रगतिके विषयमें हमें महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना होगा। सवाल यह है कि क्या हम चाहते हैं कि हमारे गांवोंमें जो भारत बसता है वह कायम रहे और अपनी अुन्नति करे। अगर चाहते हैं तो हमें अुन्हें कमसे कम अुनके वे मुख्य अुद्योग वापिस कर देना चाहिये, जो अुनके जीवनकी मुख्य आवश्यकताओंकी, यानी अन्न और वस्त्रकी पूर्ति करेंगे। भाप और बिजली आदिकी ताकतसे चलनेवाले यंत्रोद्योगोंको, या श्री पेकीसके शब्दोंमें पूंजीवादकी 'मोटर-लारीवाली अर्थरचना' को अुनके अिन अुद्योगोंकी होड़ नहीं करने देना चाहिये।

हमारी जनताकी ये मुख्य आवश्यकतायें सहयोग, समाजीकरण और विकेन्द्रीकरणकी पद्धतिसे वह खुद पूरी करे, अैसी व्यवस्था होना चाहिये और राज्यको अुसकी स्थापनामें अपनी मदद देना चाहिये। केवल अिसी तरह हम अपनी पुरानी ग्राम-पंचायतोंकी स्थापना कर सकते हैं, जिनके पास अपने कार्यका निर्वाह करनेके लिअे आवश्यक आर्थिक और राजनीतिक सत्ता होनी चाहिये। अगर हम अैसा करें तो हमारे गांवोंकी ये संस्थायें आसानीसे हमारे जनतंत्रकी बुनियादी अिकाअियां बन सकती हैं। मुझे मालूम है कि अिसके लिअे अपने संविधानमें फर्क करनेकी जरूरत होगी। लेकिन अगर शक्तिशाली औद्योगिक और व्यापारी वर्गोंके विरोधकी परवाह न करते हुअे हम अपनी अर्थरचनामें ग्रामोद्योगोंके अुद्धार और प्रसारकी प्रक्रिया शुरू कर दें, तो अुसके परिपाकके रूपमें वैसा फर्क करना कठिन नहीं जायगा।

२०–१२–'५३ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

भूदान — आजका सबसे बड़ा कार्यक्रम

[ता० ६–१२–'५३ को जानकीनगर, पूर्णिया, में दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

अपना यह हिन्दुस्तानका समाज बहुत पुराना और अनुभवी समाज है। यहांके लोग अब तो हालत अैसी है कि बहुतसे अपढ़ हैं। १००–१५० सालमें अेक नयी घटना बनी है। जो शहरमें रहते थे अैसे कुछ लोग तो अंग्रेजी तालीम पाकर विद्वान हो गये और बाकी बहुत सारा समाज अशिक्षित रहा। यह हालत पहले नहीं थी। पहले विद्वान लोग छोटे-छोटे गांवोंमें रहते थे और सबको विद्या मिलती थी। अब तो अैसा हुआ है कि जिसे थोड़ी विद्या मिली, वह फौरन शहरमें चला जाता है। अिसलिअे हालत यह है कि जनता सारी अपढ़ है। तुलसी रामायण, जो तुलसी-दासने जनताके लिअे रची थी, वह भी सब पढ़ सकें अैसी हालत नहीं है। अितना सारा होनेके बाद भी हिन्दुस्तानके लोग अज्ञानी नहीं हैं।

बहुत पुराने जमानेसे यहां खेती होती आयी है। किसीको खेतीकी तालीम नहीं देनी पड़ती। परम्परासे खेती चली आयी है। अुसी तरहसे कुछ सदाचार भी परम्परासे हमारे यहां हैं। परिणाम-स्वरूप यहांकी जनता कुल मिलाकर अपना सारा व्यवहार आसानीसे चलाती है और बड़े-बड़े काम हो जाते हैं। स्वराज्यके बाद सबको वोटका हक दिया गया, तो बहुत लोगोंको चिन्ता थी कि अिसका अुपयोग कैसे किया जायेगा? गांवोंके लोग अशिक्षित हैं, वोटके हकका क्या होगा? कितने दंगे-फसाद होंगे? अिस तरहका अन्देशा लोगोंको था। पर सारी दुनियाको आश्चर्य हुआ जब दुनियाने देखा और सुना कि यहांका चुनाव शांतिसे हो गया और करोड़ोंने मतदान किया। दुनियाको आश्चर्य हुआ कि अितनी अशिक्षित जनता होते हुअे भी कितनी शांतिसे काम हो गया। लेकिन यह आश्चर्यकी बात नहीं है। यहांकी जनता अनुभवी जनता है और अनुभवसे अुसके खूनमें कुछ गुण आ गये हैं। लोग जानते भी नहीं हैं कि वे कौनसे गुण हैं? पर हैं जरूर और यह बात दुनियाके लोगोंने मानी है कि हिन्दुस्तानके लोगोंमें शांति है। पर शांतिमें ताकत होती है, शांतिमें हिम्मत होती है, यह बात अभी साबित नहीं हुअी है। आज लोग समझते हैं कि शांतिवाले लोग दब्बू बन जायेंगे। वे अन्यायका प्रतिकार नहीं कर सकेंगे। अगर अन्यायका प्रतिकार करना है तो शांतिको छोड़ना होगा। अिस तरह सोचनेवाले सोचते हैं। पर दुनियाने देखा कि शांतिके बदौलत यहांसे अंग्रेजी सल्तनत हट गयी। यह बात अितिहासमें दाखिल हुअी और शांतिमें भी ताकत होती है अिसका अनुभव दुनियाको हुआ। लेकिन स्वराज्य मिला, अुसके और भी दूसरे कारण हैं। हिन्दुस्तानको स्वराज्य देना लाजिमी हो गया था, अिसलिअे हिन्दुस्तानको स्वराज्य शांतिसे प्राप्त हुआ। फिर भी अुसमें और कअी कारण हैं, और अिसलिअे शांतिका पूरा दर्शन नहीं हुआ है। आज स्वराज्य-प्राप्तिके बाद अगर हम गरीबीका मसला, अूंच-नीचका मसला यानी सामाजिक विषमता और आर्थिक विषमताका मसला शांतिसे हल करते हैं, तो शांतिकी शक्तिका दर्शन दुनियाको होगा। अभी दुनिया यह देखनेके लिअे तरस रही है कि शांतिके तरीकेसे मसले हल हों। आज सारी दुनिया भय-भीत है। शस्त्रास्त्र बढ़ा रही है और जिनके पास कम शस्त्रास्त्र हैं, वे अधिक शस्त्रास्त्रवालोंके हाथमें दाखिल हो रहे हैं। अभी अखबारोंमें आपने देखा होगा कि पाकिस्तान और अमेरिकाके बीच अैसी कुछ बात चल रही है कि पाकिस्तानमें हवाअी अड्डे बनानेके लिअे अमेरिकाको कुछ सहूलियत मिलेगी। पर यह बात सुनते ही रशियाने लिख भेजा है कि अुससे मुझे खतरा है। अमेरिकाको रशियाका डर महसूस होता है और रशियाको

www.vinoba.in

अमेरिकाका, यद्यपि दोनों शस्त्रास्त्रोंसे परिपूर्ण हैं। रशियामें जमीन ही जमीन पड़ी है। पड़ती जमीन पड़ी है, अुसमें फसल पैदा करना बाकी है। बेहिसाब जमीन वहां है। अमेरिकामें प्रति मनुष्यके पीछे १०–१२ अेकड़ जमीन पड़ी है। दोनों सम्पन्न देश हैं, लेकिन अेक-दूसरेसे डरते हैं। छोटे देश भी अेक-दूसरेसे डरते हैं। पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके पास अधिक सेना नहीं है। वे रख भी नहीं सकते। सैनिक शक्तिके खयालसे वे छोटे माने जायेंगे, पर वे भी अेक-दूसरेसे डरते हैं। अिस तरह सारी दुनियामें आज डर छाया हुआ है और अुसका कारण यह है कि दुनियामें कुछ अैसे मसले हैं, जो हल नहीं हो रहे हैं। अिसलिअे कशमकश जारी है। लेकिन मुख्य मसला अेक ही है। अूंच-नीचका। किसीके पास अधिक दौलत है और किसीके पास कम दौलत है। यह हालत जागा हुआ मानव माननेके लिअे तैयार नहीं है। जब तक मानव जागा नहीं था, तब तक अपना-अपना नसीब मानकर चुप रहता था। पर जबसे सारी दुनियामें मानव जाग गया है, तबसे किसीके पास ज्यादा दौलत रहे और किसीको खानेको भी नहीं मिले — यह जो विषमता है, यह जो दर्जे बने हैं, अिसे सहन करनेके लिअे मनुष्य तैयार नहीं है। और अिसीलिअे आज कशमकश चल रही है। ये मसले हल करनेका शांतिका कोअी तरीका नहीं मिलता, तब तक हिंसाका बोलबाला रहेगा और समाजमें शांति नहीं रहेगी।

अिसलिअे स्वराज्यके बाद हम अपना आर्थिक आजादीका मसला शांतिसे हल कर सकते हैं, यह बात सिद्ध करनेकी बहुत जरूरत है। अगर हम यह बात सिद्ध करते हैं, तो हिन्दुस्तान बच जाता है और दुनिया बच जाती है। लेकिन अगर हम यह सिद्ध नहीं करते कि शांतिसे समाजमें शांति ला सकते हैं, तो दुनियामें झगड़े अटल रहेंगे। झगड़े टल नहीं सकते। और अिसके आगे जो भी लड़ाअियां होंगी, वे छोटे पैमाने पर नहीं होंगी। अभी कोरियाकी लड़ाअी हुअी। लाखों लोग कत्ल हुअे। कत्लसे ज्यादा लोग घायल हुअे। पर अुसकी महायुद्धमें गिनती नहीं है। अगर महायुद्ध छिड़ा तो मनुष्य-जातिका संहार हो सकता है। अिसके आगे छोटी-छोटी लड़ाअियां नहीं होनेवाली हैं। बड़े-बड़े शस्त्रोंकी खोज हुअी है। अगर वे लड़ाअियां टालनी हैं, तो हमारे मसले, खासकर आर्थिक विषमता मिटानेकी बात शांतिसे सिद्ध हो सकती है, आर्थिक मसला हल करनेकी ताकत शांतिमें है — यह हमें दिखाना होगा। अगर यह नहीं दिखा सकते, तो हम नहीं समझते कि हिन्दुस्तानका स्वराज्य अटल होगा, बल्कि महायुद्ध ही अटल हो सकते हैं। अिसलिअे मानवताकी रक्षाके लिअे जरूरी है कि आर्थिक मसले शांतिसे हल करके दिखायें। नहीं तो मानवता मिटेगी और मानव जानवरसे भी नीचे गिर सकता है। अैसा बड़ा भारी खतरा हिन्दुस्तानके सामने है। हिन्दुस्तानको तो अभी आजादी मिली है। अभी वह बच्चा है। अगर अुसे बड़ा बनाना है, तो हमें शांतिसे मसले हल करने होंगे; तभी गरीबोंका भला होगा, गरीबोंका अुत्थान होगा। और जब गरीबोंका अुत्थान होगा, तभी देशकी आजादी अटल हो सकती है। यह कार्यकर्ताओंके समझनेकी बात है। अिसलिअे हम जब भूदान-यज्ञका विचार समझाते हैं, तो हमें अन्दरसे अनुभूति होती है कि हम परमेश्वरका काम कर रहे हैं, परमेश्वरसे प्रेरणा पा रहे हैं और परमेश्वरका आशीर्वाद हमें मिला है। अैसा विश्वास हमारे मनमें है।

जयप्रकाशजी जैसे लोग, जिनकी गिनती क्रांतिकारियोंमें है, जो सामाजिक परिस्थितियोंका अध्ययन कर चुके हैं, मार्क्सके विचारोंका अध्ययन कर चुके हैं और अुस पर चल भी चुके हैं, भूदान-यज्ञका नाम लेते हैं और कहते हैं कि अिससे हमें राहत मिलनेवाली है। तो वे कोअी अन्ध श्रद्धावाले आदमी नहीं हैं। जो देखते नहीं, जिनको बाहरके कामोंकी खबर नहीं, वे यही मानते होंगे कि हिन्दुस्तानका अिससे भला होगा और आनेवाली आफत टलेगी। यह जो देखते हैं वे थोड़ा-थोड़ा दान देकर सन्तोष मानते हैं, पर जिन्हें अिसका व्यापक दर्शन है, जो अिसे ठीक समझे हैं, वे अिसके लिअे कितना भी त्याग करना पड़े, कितना भी समय देना पड़े, कितनी भी ताकत लगानी पड़े, अुसके लिअे तैयार हो सकते हैं। अिसलिअे जहां भी हम समझदार लोगोंको देखते हैं, अिसका बुनियादी विचार अुनके सामने रखते हैं।

सत्ता पर हमारा विश्वास नहीं है, और अुन साधनोंसे क्रांति नहीं होती, यह हम मानते हैं। और हमारा काम, हमारा विचार क्रांतिका है। आज हर किसीका विश्वास सत्ता पर है। किसीके साथ चर्चा होती है तो कहते हैं कि कानून क्यों नहीं बनता? मानो कानून कोअी भगवान् ही है। अस्पृश्यताका कानून बन चुका है। पर लोगोंमें वह भावना कहां है? बाल-विवाह न करनेका कानून है, फिर भी आज बाल-विवाह हो रहे हैं। जब जनताके हृदयमें परिवर्तन होता है, तब कानून बनता है। विचार-क्रांतिके लिअे प्रेम और ज्ञानसे बढ़कर हमने कोअी दूसरा शस्त्र नहीं जाना है।

अिसके पीछे जो मूल विचार है, जिसके अूपर अपना नव समाज बननेवाला है; अुसका भान आपमें से चन्द लोगोंको भी होगा, तो काम पूरा हुअे बिना न रहेगा। नहीं तो क्या आप समझते हैं कि हम वर्धामें बेकार पड़े हुअे थे? पर हम वह सारा काम छोड़कर निकल पड़े हैं, क्योंकि हम समझते हैं कि यह बुनियादी काम है। अगर हम यह काम नहीं करते, तो हमारे दूसरे सारे रचनात्मक काम खतम होते हैं। अिसके बिना गरीबोंका भला नहीं हो सकता और अिसलिअे हमने संस्थायें छोड़ीं और "अर्थम् वा साधयेत्, देहं वा पातयेत्" अिस निश्चयसे यहां आ पहुंचे। यह जो आग्रह हमने रखा है और जो हम परमेश्वरके सामने कर रहे हैं, वह अुन्हींकी प्रेरणासे कर रहे हैं।

जमीनका बंटवारा होगा, गांव-गांवमें ग्रामोद्योग करने होंगे और हरअेकको नअी तालीमके ढंगसे तालीम देनी होगी, जिससे शरीर-श्रम करनेके लिअे मनमें अुत्साह रहेगा और बिना श्रमके खाना पाप समझा जायेगा। ये तीन बातें करनी ही होंगी। अिसके बिना हिन्दुस्तानकी बेकारी मिट नहीं सकेगी, अिसके बिना हिन्दुस्तानकी आर्थिक विषमता मिट नहीं सकेगी और अिसके बिना हिन्दुस्तानकी सामाजिक विषमता मिट नहीं सकेगी। और हम तो यहां तक मानते हैं कि हिन्दुस्तानकी आजादी भी टिक नहीं सकेगी। अिसलिअे हम चाहते हैं कि आपके जिलेमें अैसे कुछ कार्यकर्ता निकलें, जिन्हें खेती-बाड़ीकी चिन्ता न हो, घरबारकी चिन्ता न हो, और रात-दिन काम करनेवाले हों। अितने बड़े समाजमें से क्या थोड़ेसे कार्यकर्ता नहीं मिल सकते? नौजवानोंके लिअे अिससे अधिक अुत्साहका काम नहीं है। हमने कअी बार कहा है कि अिससे अधिक जरूरी कार्यक्रम और अिससे अधिक अुत्साही कार्यक्रम कोअी हमें बताये, तो हम अिस कार्यक्रमको छोड़कर अुसको अपना सकते हैं। पर हमें वैसा कार्यक्रम कोअी नहीं बता रहा है। कोअी नहीं कहता कि अिससे अधिक अुत्साहदायी, अिससे अधिक बुनियादी कार्य कोअी है। बल्कि धीरे-धीरे अेक-अेक करके लोग अिसी तरफ आ रहे हैं। यहां तक कि कम्युनिस्ट, जो अिसे विचारकी बुनियाद पर गलत काम मानते थे, क्रांतिको रोकनेका काम मानते थे और मुर्दोंको जिलानेका काम मानते थे, वे भी आज कह रहे हैं कि यह काम अच्छा है। हम अिसे बड़ा भारी हृदय-परिवर्तन मानते हैं। हृदय-परिवर्तनकी यह मिसाल हम आपको बताना चाहते हैं।

www.vinoba.in

स्वराज्य मिलनेके बाद अेक मंजिल हमने तय की और समझ बैठे कि हमने सब कुछ पा लिया। हम किसीको दोष भी नहीं देते। स्वाभाविक है। मेरे जैसे मनुष्यको भी, जो यह काम निरंतर कर रहा है, रातमें सोना पड़ता है। शरीरका धर्म है थकान आना। अिसलिअे स्वराज्य प्राप्तिके बाद देशको थकान आयी हो, तो हम दोष नहीं देते। लेकिन अब तो ५-६ साल हो गये हैं। अिसलिअे स्वराज्यको टिकाये रखनेके लिअे अिस काममें जुट जायें यह हम चाहते हैं। भाअियो, दीपकसे दीपक लगता है। हमें जिससे प्रेरणा मिली, अुससे आपको भी मिलनी चाहिये। और अिसके लिअे जीवन न्यौछावर करनेवाले कार्यकर्ता निकलने चाहियें। हमारी मदद आपको रहेगी ही।

हमारा यह विश्वास है कि विचारोंकी बुनियाद पर ही क्रांतिकारी आन्दोलन हो सकते हैं। अिसलिअे हमारा विचार पर अधिक जोर है।

विनोबा

छोटी खेतीका अेक सफल अनुभव

सन् '३६ में पू० बापूने सेवाग्रामको अपना निवासस्थान बनाया। तभीसे आवश्यक अन्नोत्पादनके लिअे वहां खेती भी शुरू करवाअी। जमीन शुरूमें कनिष्ठ दर्जेकी ही थी। कांस, मोथा आदि घासोंसे भरी हुअी और पानबसन (पनिहाअी) थी। कांस आदि निकालकर, जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर पानीकी निकासीके वास्ते प्रबंध किया, तब पानबसन थोड़ा कम हुआ। अब जमीन दूसरे दर्जेकी बन गयी है। वह काली है और सिंचाअीके लिअे अुतनी अनुकूल नहीं है, तो भी सिंचाअी करते हैं। सिंचाअीके वास्ते पक्की नाली बनायी है। पास ही के कुअेंकी गहराअी ३४ फुट है। ३० अिंच बरसात हो तो फसल ठीक रहती है, पर अधिक हो तो पान-बसनके कारण बिगड़ जाती है और महीनों खेतमें पैर फंसते रहते हैं।

पू० बापूके बाद आश्रमवाले पू० विनोबाजीसे मार्गदर्शन लिया करते हैं। विनोबाजी बार-बार कहा करते थे कि अब आश्रम पैसेके आधार पर नहीं चलना चाहिये। यह बात हम लोग तुरंत अमलमें नहीं ला सके। आखिर ३०-१-'५२ से आश्रमने तय किया कि वह अपने श्रम पर, और फिर भी जरूरत पड़े तो समाजसे मिलनेवाले श्रम-दान पर ही चलेगा। आश्रमके पास तब ४२ अेकड़ जमीन, ६ बैल, ६ गाय थे। अधिकतर काम नौकरोंसे ही करा लेते थे। खेती घाटेमें तो नहीं रहती थी, फिर भी जैसी होनी चाहिये, वैसी नहीं होती थी। जमीनके अंदर भरी हुअी प्रचंड शक्ति खेतीके विस्तारके कारण प्रकट नहीं कर पाते थे। जब अिस बातका भान हुआ, तो बड़ी खेतीके बजाय खुद जितनी खेती कर सकें, अुतनी ही रखनेका सोचा। मअी १९५२ में अढ़ाअी अेकड़ रखकर बाकी सब पांच सालके वास्ते चरखा-संघको दे दी। चंद महीनोंके अनुभवसे यह पाया कि बिना अपने बैलके सिंचाअी करना असुविधाका है। तब अेक बैल-जोड़ी रखनेका सोचा। अेक जोड़ीके लिअे अढ़ाअी अेकड़ जमीन कम होती है, अिसलिअे और अढ़ाअी अेकड़ जमीन ली। अेक बैल-जोड़ीके साथ अेक गाय भी रखी।

पहले साल ढाअी अेकड़में से अेक अेकड़में बैलसे और डेढ़ अेकड़में हाथसे खेती की। डेढ़ अेकड़में आधा अेकड़ सिंचाअी बैलसे करायी। अेक अेकड़में ज्वारी और बाकी जमीनमें अन्य अनाज, सब्जी, फल, गन्ना आदि थे। डेढ़ अेकड़में १५ प्लाट बनाये थे। पूरे अेक सालमें ६,०२५ घंटे आदमीके और ४८१¾ घंटे अेक बैल-जोड़ीके लगे। कभी-कभी निंदाअी आदि काम पूरा करनेकी जरूरत पड़ती थी, तब बाहरके मजदूरोंको भी लगाया गया। अिस तरह ८०० घंटे मजदूरोंसे लिये। ये घंटे अूपरके हिसाबमें आ गये हैं।

ढाअी अेकड़की खेतीमें लगे घंटे और पैदावार अिस प्रकार है:

क्षेत्र-फल गुंठोंमें	फसलका नाम	आदमीके घंटे	बैलके घंटे	पैदावार पौंडमें	प्रति अेकड़ पैदावर पौंडमें
४०	ज्वार	४००	५०	२,०८०	२,०८०
५+१*	गेहूं	३२०	१७½	२८७½	१,९२०
४	धान	३९१	२१¾	२४०	२,४००
१०	तुअर, मूंग, ज्वारी	१६०½		२२१½ ६ १५२	१,५१८
२	चना, मटर	११८¼	५½	५७½ २½	१,२००
५	सोयाबीन	३६½		६६	५२८
५	तिल	९३½		५६	४४८
७	मूंगफली	१५४¾		१२०	६८६
५	कपास	२२२¾		२४८	१,९८४
६	सब्जी	१,३२५	९९½	६,४००	४२,६६६
४½	फल (पपीता आम,अमरूद)	३२९	२४	२,५६०	
१¾	केले	७५४½	९०½		
५	गन्ना	६१०	१२०		
	खेतीके अन्य काम:				
	निरीक्षण	७४¾			
	सार-संभाल	१२२¼	५		
	औजार-मरम्मत	१००¾			
	कोठार	२३६¾			
	कंपोस्ट	३५१¾	४८½		
	डांड़-सफाअी	२१३¾			
		६,०२५	४८१¾		

(अेक अेकड़के ४० गुंठे होते हैं।)

अूपरकी पैदावारमें कुछ चीजें अेकसे अधिक स्थानमें बोयी गयी थीं। वह सब मिला कर अिस प्रकार हिसाब होता है:

फसलका नाम	कुल पैदावार पौंडमें	संतुलित आहार फी आदमी प्रतिदिन	५ आदमियोंका अेक सालका आहार पौंडमें	बचतका आहार पौंडमें	बचत आहारकी कीमत रु. आ. पा.
ज्वारी	२,२३२	३० तोला	२,२५०	५०९	५०-१४-४
गेहूं	२८७½	१० "			
धान	२४०	१० "			
दाल	३५३½	२½ "	११२½	२४०	३७-८-०
तिलहन	१६०	६ "	२६०	नहीं बचा	
गुड़	६४०	५ "	२२५	४१५	१०३-१२-०
भाजी	६,४००	४० "	१,८००	४,६००	४३१-४-०
फल	२,५६०	२० "	९००	१,६६०	१५५-१०-०
कपास	२४८	२¾ "	१२४	१२४	४६-८-०
दूध		३० "			
नीबू					४९-१४-९
केले					१९०-०-०
गन्ना					१५०-०-०
चारा					५६-१२-०
					१,२७२-३-१

* धानकी फसलके बाद अेक गुंठेमें गेहूंकी फसली ली गयी।

www.vinoba.in

५ आदमियोंका धान्य आदिके सिवा अन्य खर्च	७२४-६-०	१२७२-३-१
खेतीके लिअे खर्च	+ ३७२-८-०	- १०९६-१४-०
	आखिरी बचत	१७५-५-१

ढाअी अेकड़की पैदावारके आंकड़े रुपयोंमें देखकर चन्द लोगोंको लगेगा कि यह पैदावार कम है। परंतु यह ध्यानमें रखना चाहिये कि हमने बाजारके लिअे पैदावार नहीं की है। हमारा अुद्देश्य अपनी जरूरत पूरी करना रहा है। वचतको जरूर बेचा गया है, पर वह भी स्थानिक संस्थाओंको ही बेचा गया है। बाजारके लिअे पैदा करनेमें यही दृष्टि रहती है कि किस चीजका भाव अच्छा मिलेगा। वैसी पैदावार हम करते तो अूपरसे दुगुनी कीमत जरूर मिल सकती थी।

(१) ज्वारी, गेहूं, धान प्रति पौंड दो आने, दाल ढाअी आने, गुड़ चार आने, सब्जी-फल डेढ़ आने, कपास छः आने, अिस दरसे कीमतें आंकी गयी हैं।

(२) धान्य आदिके सिवा प्रति व्यक्ति नीचे लिखा वार्षिक खर्च माना है: दूध (साढ़े चार आने पौंड) ७५-१२-०, अींधन आदि २२-८-०, मकान-किराया १५-०-०, मिट्टीका तेल ९-०-०, व्यवस्था-खर्च १८-०-०, अन्य: डाक आदि ४-१०-०। कुल अेक व्यक्तिका खर्च १४४-१४-० × ५ व्यक्तिका कुल खर्च — ७२४-६-०

(३) खेतीके लिअे खर्च : ढाअी अेकड़के लिअे खाद १९८-१२-०, बीज ५०-४-०, औषधि ३-०-०, बैल-जोड़ीका किराया १२०-०-०। अिस तरह कुल ३७२-८-०।

छोटे टुकड़ोंके अुत्पादनके नतीजे

हमारा खयाल है कि अभी तकके अनुभव और अूपरके आंकड़ों परसे निम्न निचोड़ निकाल सकते हैं:

(१) खेतीकी अुन्नति करनी हो तो छोटी-छोटी खेतीके जरिये ही वह कर सकते हैं। अुससे खेतीकी दुर्दशाको तो अवश्य बचा सकते हैं और खेती पर पूरा ध्यान भी दे सकते हैं।

(२) ढाअी अेकड़में से पांच आदमियोंके लायक अेक सालका संतुलित आहार तथा अन्य जरूरतें पूरी हो सकती हैं और तीस रुपये प्रति व्यक्ति बचते हैं। फी आदमी प्रति दिन चार घंटे श्रम और सालमें तीन सौ दिन काम काफी है।

(३) खेतमें कअी काम अैसे रहते हैं, जो नियत समय पर करना जरूरी होता है। २½ अेकड़के लिअे कटाअीसे लेकर अनाज घरमें आने तक १,१७८ घंटे, बोवाअीमें ४३० घंटे और निंदाअीमें ६३२½ घंटे लगे। यदि ये तीनों काम समय पर न हों तो बहुत नुकसान होता है। किसान भी अिससे परेशान रहते हैं और हम तो थे ही। अिसलिअे बाहरके मजदूरोंकी मदद ली गयी। पर अैसे समय यदि स्कूल, कॉलेज, कचहरी, दफ्तर आदिको छुट्टी रहा करे, तो वे लोग किसानोंको मदद कर सकते हैं।

(४) अिन तीनों कामोंके लिअे हमें मेहनत भी अधिक करनी पड़ी, खूब सावधानी भी रखी गअी। परिणाम-स्वरूप अट्ठाअीस मन ज्वारीमें से केवल पांच ही भुट्टे रोगी मिले।

(५) वक्त पर बारिश नहीं हुअी, तो कपासको हाथसे पानी देकर बचाया और चौदह बार हाथ-डौरा किया। बैल-डौरेकी तुलनामें कअी गुना अच्छा काम हुआ। पांच गुंठे यानी ½ अेकड़ में से २४८ पौंड कपास मिला। हिन्दुस्तानकी कपासकी औसत पैदावारसे यह कअी गुना ज्यादा है।

(६) मैं खेती-कामके लिअे बहुत जगह घूम चुका हूं। सरकारी और गैर-सरकारी लोग बोनेके साधनोंकी दिक्कतोंसे परेशान हैं और अुसके अच्छे प्रकारोंके आविष्कारमें लगे हैं। मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सबसे बढ़िया बोनेका साधन हाथ है। मैंने अैसे औजार बनाये हैं, जिनसे अेक आदमी अेक अेकड़में दो घंटेमें १, १॥ २, ३ फीट अंतर पर लंबी लाअिन खींच सकता है और फिर बादमें अुस निश्चित अंतर पर हाथसे ही बो सकता हैं। गेहूं हाथसे बोना असंभव है, अैसा मैं समझता था। जब हाथ-खेती शुरू की, तो अुसके वास्ते अेक हलके जैसा औजार बनाया और अुससे गेहूं बोकर ६ गुंठेमें २८७ पौंड, यानी अेक अेकड़में १९२० पौंड गेहूं लिये। अिसके अलावा बैलके औजारोंमें बखर, हल, डौरा, बोनेके साधन आदि नये बनाये हैं, जो बहुत कामयाब हुअे हैं।

(७) आंजकल तीन कारणोंसे खेतीकी अुपज कम मिलती है: औजार, शिक्षण और परिश्रम। अिन्हीं तीनोंका अभाव बहुत है। हमने कुछ हद तक औजारोंका मसला हल कर लिया है। जबसे हमने बिना मजदूरोंके काम शुरू किया, रोजमर्राके कामके अनुभवसे थोड़ा शिक्षण भी पाया है। परिश्रम तो है ही। परिश्रमसे वंचित रहनेसे क्या असर होता है, अुसकी अपनी ही अेक मिसाल देता हूं।

१९४२ से १९५० के दरमियान जेल और आश्रममें शरीर-श्रमसे मैं वंचित रहा, तो अेक फर्लांग चलना, अेक बालटी पानी अुठाना तक मुश्किल हो गया था। अुसी अवस्थामें भगवान् बुद्धका अेक वचन पढ़ा, जो अुन्होंने बीमार शिष्यको बताया था: "बीमारीसे मुक्ति पाना हो, तो ४०० या ५०० मील पैदल तीर्थयात्रा करो या फिर ४०० या ५०० जानवरोंके पानी पीनेके लिअे अकेले ही तालाब खोदो।" अिन दोनोंके बारेमें मैंने बहुत सोचा और १९५० में किसीको न कहते हुअे चुपकेसे पैदल-यात्राके लिअे आश्रमसे बाहर निकल पड़ा। छः माहमें १५०० मील घूमा, तब अितनी शक्ति आ गयी थी कि अेक दिनमें ४० मील तक घूम सका। अुसके बाद आश्रममें वापस आया और खेती-काम शुरू किया। भगवान् बुद्धके दूसरे वचनका, यानी खोदनेका महत्त्व भी रोजमर्रा देखता हूं। अेक दिन शरीरश्रम न हुआ तो बेचैनी-सी लगती है।

सेवाग्राम आश्रम — रेड्डीजी

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
सुस्ती और आत्मवंचनासे बचें	मगनभाई देसाई	३६१
कार्यकर्ताओंको चेतावनी	विनोबा	३६२
कृषि-अर्थशास्त्रियोंके लिअे सवाल	मगनभाई देसाई	३६४
बड़े अुद्योग बनाम छोटे अुद्योग	मगनभाई देसाई	३६४
भूदान—आजका सबसे बड़ा कार्यक्रम	विनोबा	३६५
छोटी खेतीका अेक सफल अनुभव	रेड्डीजी	३६७
टिप्पणियां:		
शांति-सेना	राल्फ आर० कैथान	३६२
खानबन्धुओंकी रिहाअी	म० प्र०	३६३
यह काफी नहीं है	म० प्र०	३६३
भारतीय हिन्दी पारंगत परीक्षा	देवदूत विद्यार्थी	३६३
अेक सरकारी विज्ञापन!	गोपालदास पटेल	३६३

www.vinoba.in